UNIT-1

Date __/__/__ 2020-21

समाजशास्त्र

बी.ए. प्रथम वर्ष

प्रथम प्रश्न पत्र

समाजशास्त्र परिचय

समाजशास्त्र: उत्पत्ति, परिभाषा, अध्ययन क्षेत्र एवं प्रकृति →

समाजशास्त्र की उत्पत्ति का इतिहास अधिक प्राचीन नहीं है। अन्य सामाजिक विज्ञानों जैसे अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, सामाजिक मानवशास्त्र, दर्शनशास्त्र तथा इतिहास की तुलना में समाजशास्त्र सबसे बाद में विकसित होने वाला विज्ञान है।

एक लम्बे अन्तराल के बाद पन्द्रहवीं शताब्दी से कुछ ऐसी घटनाएँ घटित होना आरम्भ हुई जिनके प्रभाव से पश्चिम के समाजों की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दशाओं में तेजी से परिवर्तन होने लगा।

इन घटनाओं में तीन घटनाएँ सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं जिन्हें हम पुनर्जागरण, फ्रांस की क्रान्ति, तथा इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति के नाम से जानते हैं। फ्रान्स की क्रान्ति एवं इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति ने यूरोप के आर्थिक ढाँचे में इतनी तेजी से परिवर्तन आने लगा कि उस समय के अधिकांश ~~विद्व~~ विद्वान एक नये सामाजिक

विज्ञान के द्वारा इस बदलती हुई सामाजिक संरचना का अध्ययन करना आवश्यक मानने लगे। सेण्ट साइमन वह पहले विद्वान थे जिन्होंने सन 1824 में यह विचार रखा कि राजशाही और सामन्तवादी समाज की तुलना में आज समाज का ढांचा इतना बदल चुका है कि इसका व्यवस्थित अध्ययन करने के लिए एक नये सामाजिक विज्ञान को विकसित करना जरूरी है।

इसी आधार पर कोम्ट ने आरम्भ में सामाजिक भौतिकी का नाम दिया। शीघ्र ही अनेक दूसरे लेखकों ने कोम्ट के विचारों को लेकर जो टिप्पणियाँ दी, उन्हें देखते हुए सन 1838 में कोम्ट ने समाज का व्यवस्थित अध्ययन करने वाले विज्ञान को समाजशास्त्र के नाम से सम्बोधित किया। इसी कारण ऑगस्त कोम्ट को 'समाजशास्त्र का जनक' कहा जाता है।

समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा →

शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से विचार करने पर हम पाते हैं कि समाजशास्त्र दो शब्दों से मिलकर बना है जिनमें पहला शब्द 'सोशियस' (Socius) लैटिन भाषा से और दूसरा शब्द 'लोगस' (Logas) ग्रीक भाषा से लिया गया है।

Date ___/___/___

'सोशियस' का अर्थ है - समाज और 'लोगस' का अर्थ है - शास्त्र
इस प्रकार 'समाजशास्त्र' का शाब्दिक अर्थ समाज का शास्त्र या समाज का विज्ञान है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने इस नाम का विरोध किया और [redacted] 'Sociology' के स्थान पर 'इथोलोजी' (Ethology) शब्द का प्रयोग का सुझाव दिया जिसकी अधिकांश विद्वानों ने कटु आलोचना की। हरबर्ट स्पेन्सर ने 'Sociology' [redacted] शब्द को ही अधिक उपयुक्त मानते हुए यह निष्कर्ष दिया कि "प्रतीकों की सुविधा और सूक्ष्मता, उनकी उत्पत्ति सम्बन्धी वैधता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है" इसके बाद से सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन करने वाले विज्ञान को 'समाजशास्त्र' के नाम से ही सम्बोधित किया जाने लगा।

समाजशास्त्र की परिभाषाओं को प्रमुखतः निम्नलिखित चार भागों में बाँटा [redacted] जा सकता है →

(1) समाजशास्त्र समाज का अध्ययन →

दुर्खीम, गिडिंग्स, समनर, वार्ड आदि समाजशास्त्री इसी वर्ग में आते हैं।

(2) समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन →

मैकाइवर तथा पेज, क्यूबर, मैक्स वेबर, कौसर अनेक

Page No.

Saathi

Date ___/___/___

विद्वान इस श्रेणी में आते है।

(3) **समाजशास्त्र सामाजिक अन्तर्क्रियाओं का अध्ययन** — गिन्सबर्ग, सिम्मेल, होबहाउस, ग्रीन आदि विद्वान इस श्रेणी में आते है।

(4) **समाजशास्त्र समूहों का अध्ययन** → हेनरी जॉनसन प्रस्यात समाजशास्त्री इस वर्ग के प्रमुख विचारक है।

समाजशास्त्र सम्पूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन करने वाला विज्ञान है। इसमें सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। सामाजिक सम्बन्धों को ठीक से समझने की दृष्टि से सामाजिक क्रियाएं सामाजिक अन्तःक्रिया एवं सामाजिक मूल्यों के अध्ययन पर इस शास्त्र में विशेष जोर दिया जाता है।

समाजशास्त्र का विषय-क्षेत्र →

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों को मुख्यतः दो भागों में बांटा जा सकता है जो इस प्रकार है →

Date ___/___/______

(1) स्वरूपात्मक अथवा विशिष्टात्मक सम्प्रदाय →

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल है। इस विचारधारा के अन्य समर्थक वीरकान्त, वान विज, मैक्स वेबर तथा टानीज के अनुसार समाजशास्त्र एक विशेष विज्ञान है।

आलोचना →

[redacted] [redacted] स्वरूपात्मक सम्प्रदाय पर अनिश्चितता और अस्पष्टता का आरोप है। इसके समर्थक समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र को विशिष्ट बनाने के जो तर्क दिये उनकी सोरोकिन ने कटु आलोचना की है।

(2) समन्वयात्मक सम्प्रदाय →

इस सम्प्रदाय के समर्थक दुर्खीम, सोरोकिन, हॉबहाउस समाजशास्त्र को समाज का सामान्य विज्ञान मानते हैं। इनका कहना है कि इसे सम्पूर्ण समाज की सामान्य विशेषताओं का अध्ययन करने वाले विज्ञान के रूप में ही विकसित किया जा सकता है।

वास्तविकता यह है कि इन दोनों सम्प्रदायों के विचारों में कोई आधारभूत अन्तर नहीं है। इसका कारण यह है कि कोई विज्ञान न तो पूर्णतया विशेष हो सकता है और न ही वह प्रत्येक दशा में सामान्य हो सकता है।

Saathi

Date ___/___/___

इस प्रकार यह उचित प्रतीत होता है कि समाजशास्त्र के विषय-क्षेत्र में सामान्य तथा विशिष्ट सभी प्रकार के सम्बन्धों को समान महत्व दिया जाय।

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु →

स्वरूपात्मक तथा समन्वयात्मक सम्प्रदाय के विचारों के पश्चात सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि 'समाजशास्त्र' की वास्तविक विषय-वस्तु क्या है? इस विवेचन में दुर्खीम, गिन्सबर्ग, कोसर तथा इंकेल्स द्वारा प्रस्तुत विचारों की सहायता से समाजशास्त्र की विषय-वस्तु को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है →

(1) दुर्खीम के विचार →

इन्होंने तीन भागों में स्पष्ट किया है। →

(क) सामाजिक स्वरूपशास्त्र

(ख) सामाजिक शरीरशास्त्र

(ग) सामान्य समाजशास्त्र

(2) गिन्सबर्ग के विचार →

इन्होंने चार भागों में विभाजित किया है →

(क) सामाजिक स्वरूपशास्त्र

(ख) सामाजिक प्रक्रियाएँ

(ग) सामाजिक नियन्त्रण
(घ) सामाजिक व्याधिकी

(3) कोरन्स के विचार →
इन्होंने इसे छः भागों में बाँटा है →

(क) मानवीय क्रियाएँ
(ख) सामाजिक संगठन
(ग) सामाजिक नियन्त्रण
(घ) सामाजिक परिवर्तन
(ङ) सामाजिक संस्थाएँ
(च) सामाजिक संहिताएँ

(4) समाजशास्त्र की विषय-वस्तु की सामान्य रूपरेखा →
कुछ वर्ष पहले अमरीका में हुई एक समाजशास्त्रीय गोष्ठी में समाजशास्त्र की विषय-सामग्री के बारे में एक ऐसी रूपरेखा तैयार की गयी जिसमें समाजशास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन किये जाने वाले लगभग सभी प्रमुख विषयों का समावेश किया जा सके।
इसका उल्लेख इस प्रकार है →

(1) समाजशास्त्रीय विश्लेषण
I मानव- संस्कृति तथा समाज
II समाजशास्त्री- सन्दर्भ तथा दृष्टिकोण
III सामाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त वैज्ञानिक पद्धति

Saathi

Date ___/___/______

(2) सामाजिक जीवन की प्राथमिक इकाइयाँ

I सामाजिक क्रिया तथा सामाजिक सम्बन्ध
II मानव - व्यक्तित्व
III समूह
IV समुदाय : नगरीय तथा ग्रामीण
V समितियाँ एवं संगठन
VI जनसंख्या
VII समाज

(3) आधारभूत सामाजिक संस्थाएँ

I परिवार एवं नातेदारी
II आर्थिक संस्थाएं
III राजनैतिक एवं वैधानिक संस्थाएं
IV धार्मिक संस्थाएं
V शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक संस्थाएं
VI मनोरंजनात्मक एवं कल्याण संस्थाएं
VII कलात्मक तथा अभिव्यक्तिकारी संस्थाएँ

(4) मौलिक सामाजिक प्रक्रियाएं

I विभेदीकरण एवं
II सहयोग, समायोजन एवं सात्मीकरण
III सामाजिक संघर्ष (क्रान्ति और युद्ध)
IV संचार (जनमत - निर्माण - परिवर्तन)
V समाजीकरण एवं सैद्धान्तीकरण
VI सामाजिक मूल्यांकन
VII सामाजिक विचलन
VIII सामाजिक एकीकरण
IX सामाजिक नियन्त्रण
X सामाजिक परिवर्तन

समाजशास्त्र की प्रकृति

समाजशास्त्र की प्रकृति वैज्ञानिक है अथवा नहीं? इस सम्बन्ध में कुछ विचार इस प्रकार है →

विज्ञान का अर्थ तथा विशेषताएं →

विज्ञान का अर्थ या विज्ञान का सम्बन्ध एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अथवा वैज्ञानिक पद्धति से है।

विशेषताओं को संक्षेप में →

I वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
II तटस्थ अवलोकन
III तथ्यों का विश्लेषण तथा वर्गीकरण
IV 'क्या है' का वर्णन
V कार्य-कारण का सम्बन्ध
VI सामान्यीकरण
VII सिद्धांत की परीक्षा और पुनर्परीक्षा
VIII भविष्यवाणी की क्षमता

समाजशास्त्र किस प्रकार विज्ञान है? →

I समाजशास्त्र में वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग होता है-
II तथ्यों का तटस्थ अवलोकन
III समाजशास्त्र में तथ्यों का विश्लेषण तथा वर्गीकरण किया जाता है-
IV समाजशास्त्र 'क्या है' का वर्णन करता है
V कार्य-कारण के सम्बन्ध का स्पष्टीकरण
VI समाजशास्त्रीय सिद्धान्त परीक्षा व पुनर्परीक्षा के योग्य है

Saathi

Date ___ / ___ / ______

VII समाजशास्त्र में भविष्यवाणी की क्षमता है

समाजशास्त्र की वैज्ञानिक प्रकृति के विरुद्ध आरोप

I सामाजिक घटनाओं की जटिलता तथा परिवर्तनशीलता
II निष्पक्षता का अभाव
III सामाजिक तथ्यों की माप में कठिनाइयाँ
IV समाजशास्त्र में प्रयोगशाला का अभाव
V समाजशास्त्र भविष्यवाणी करने में असमर्थ
VI सार्वभौमिकता का अभाव

समाजशास्त्र की प्रकृति संबंधी निष्कर्ष -

I समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है न कि प्राकृतिक
II समाजशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान है आदर्शात्मक नहीं
III समाजशास्त्र एक विशुद्ध विज्ञान है व्यावहारिक नहीं
IV समाजशास्त्र एक अमूर्त विज्ञान है मूर्त नहीं
V समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है विशेष नहीं
VI समाजशास्त्र एक तार्किक तथा अनुभवसिद्ध विज्ञान है

Saathi

Date ___/___/______ 2

समाजशास्त्र एवं अन्य सामाजिक विज्ञान

समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों के सम्बन्ध को समझने से पहले इन विचारों को जान लेना आवश्यक होगा क्योंकि दुर्खीम-दर्श में समाजशास्त्र व अन्य सामाजिक विज्ञानों के पारस्परिक सम्बन्ध को उचित रूप से समझा जा सकता है।

(1) समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र
(2) समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र
(3) समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र
(4) समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान

निष्कर्ष -> सभी सामाजिक विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं।

Saathi

Date __/__/____ (3)

समाजशास्त्रीय अध्ययन का मानविकी उन्मेष

मानविकी उन्मेष अभिमुखन अथवा दृष्टिकोण का तात्पर्य सामाजिक घटनाओं को मानवीय परिस्थितियों के सन्दर्भ में समझना तथा उनका वास्तविक विश्लेषण करना है।

मानविकी उन्मेष का तात्पर्य सामाजिक घटनाओं का इस तरह अध्ययन करना है जिससे जटिल और परिवर्तनशील मानवीय सम्बन्धों और विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को उनकी पृष्ठभूमि एवं कुछ विशेष अर्थ के सन्दर्भ में समझा जा सके।

विशेषताएँ → (1) यह समाज के शोषित और कमजोर वर्गों के जीवन की छोटी-घटना मा अध्ययन
(2) केवल साक्षात्कार के आधार पर निष्कर्ष दिया जा
(3) यह मानता है कि सामाजिक तथ्य प्राकृतिक घटनाओं की तरह स्थिर नहीं होता
(4) इसमें अध्ययन करते समय सहभागी अवलोकन, डायरी, आत्म
(5) यह ज्ञान की उपयोगिता व्यवहारिक प्रयोग पर मानता है
(6) इसमें वस्तुपरक ही नहीं बल्कि विषयपरक अध्ययन होता है

मानविकी उन्मेष से सम्बन्धित प्रमुख उपागम

(1) लोक पद्धतिशास्त्र
(2) प्रघटनाशास्त्र
(3) प्रतीकात्मक अन्तर्क्रियावाद
(4) आमूल परिवर्तनवाद